भूमिका

देखा गया है तो यह भारत सार कई जबानों में पद्य व गद्य में निर्मित है परंच ऐसा ग्रंथ नहीं था जो आम फ़हम हो जिसको आबाल वृद्ध सब समझ सकें ऐसा देखकर मैं अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार इसी महाभारत को आठ हिस्सों में विभक्त करके गद्य पद्य बनाने का साहस कर यह प्रथमभाग आपलोगों की सेवा में भेट करताहूं आशाहै कि आप लोग सौहार्द वस इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और मेरे परिश्रमको सफल करेंगे । मैं कोई कवि नहींहूं और न पहले कोई कविता करने का मौका मिला है इस वास्ते इस में यदि कोई त्रुटी होगई हो तो क्षमा करैं।

प्रार्थना
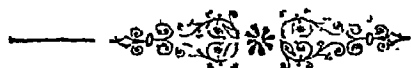
चतुर्भुज होके सुदर्शन को सम्हाल आजा ।
क्रोध, मद, लोभ के पंजे से छुड़ाले आजा ॥
मुझको पामाल यह कर डालेंगे दुशमन निश्चय ।
मैं तो तेरा हों तू निज कंठ लगाले आजा ॥
बनके रथवान कि अर्जुन के मददगार बने ।
मेरा रथ बीच भँवर उसको बचाले आजा ॥
आज फिर द्रोपदी को घेरा हुआ दुष्टों ने ।
रक्षा करनेको ओ फिर बनसरी वाले आजा ॥
वीर अर्जुन को अता ज्ञान किया वह बेहद ।
एक दो शब्द तो मुझको भी सुनादे आजा ॥
तेरा वादा था कि जब धर्म की हानी होगी ।
लूंगा औतार—वही आया समय—ले आजा ॥
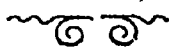
—:व्याख्यान:—

महाभारत उस युद्ध से आशय है ज्यो द्वापर युग के अन्त में कुरु क्षेत्र के मैदान में हुआ था इस लडाई का सबब सिर्फ भाई भाई की आपस की फूट थी।

द्वापर युग मे भारत के चन्द्रवंशी राजाओं में महाराज शान्तनु बडे पराक्रमी राजा थे वे सत्यवती नाम की एक लड़की से विवाह करना चाहते थे उनके देवव्रत नाम एक सुयोग्य पुत्र भी थे कन्या के पिताने महाराजा शान्तनु से कहा कि आप अगर इस लड़की से जो पुत्र हो उस को गद्दी दें तो मैं आप को कन्या प्रदान करसकता हूँ। जिस पर देवव्रत ने कन्या के पिता के सामने प्रण किया कि मै राजगद्दी पर न बैठूंगा। कन्या के पिता ने फिर प्रश्न किया कि आप नतो आप की सन्तान तो जरूर हक मांगेगी। जिस पर उन्हों ने यह घोर प्रतिज्ञा की कि मैं जन्म भर विवाह ही न कराऊंगा।

इस कड़ी प्रतिज्ञा के कारण उनका नाम भीष्म पड़ा ?

सत्यवती का विवाह राजा के साथ होही गया और उसके चित्राङ्गद, विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र हुए और होकर निःसन्तान ही परलोकवासी होगये तब देवव्रत ने (ज्यो अपनी भीष्म प्रतिज्ञा के कारण भीष्म के नाम से प्रसिद्ध होगये थे और जिन का हाल आयन्दा और बयान होगा) ब्रह्मर्षि वेदव्यासजी के तपोबल से अपने दोनों भाइयों की विधवाओं से धृतराष्ट्र और पांडव नाम के दो पुत्र उत्पन्न कराये। धृतराष्ट्र जन्म से ही अन्धे थे इस लिए वडे होने पर भी राज्य न पासके और पाडवजी राजगद्दी पर बैठे। लेकिन उन के मरने पर धृतराष्ट्र फिर राज के मालिक हुये।

(बनजें राधेश्याम)
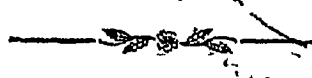
भारत में था इक समय, चन्द्रवंश का राज।
धृतराष्ट्र उस समय थे, महाराजाधिराज ॥

जन्म ही से नाबीना थे, लेकिन सौ लड़के रखते थे।
बलधारी योधा सब ही थे, और अपने बल में यकता थे ॥
पाण्डवजी ने जिस समय कि, इस दुनियां से रेहलत पाई थी
अपने भाई नाबीना को, अपनी गद्दी संभलाई थी ॥
पाण्डवजी के थे पुत्र पाँच, जिनमें से बड़ा युधिष्टर था।
उस से था छोटा भिमसेन, और उससे छोटा अर्जुन था ॥

नकुल और सहदेव थे, दो और राजकुमार।
उन सौ में से था बड़ा, दुर्योधन मक्कार ॥

सदा यही वह चाहता था, यह मर जायें यह खप जायें।
और उसकी आँखों के आगे, दुनियां से गायब होजायें ॥
कई दफा मक्कारी से, उन्हें मरवाने की कोशिश की।
कभी डुबवाने की कोशिश की, कभी जलवाने की कोशिश की

आखिर होता है वही, जो उसको मंजूर।
दखल दे उसके काम में, है किसकी मकदूर ॥

*द्रोण पितामह आदि सब, जमा था कुल दरबार।
राजा ने तब उस जगह, प्रगट किया विचार ॥

धृतराष्ट्र—मैंने यह दिल में ठानी है होगये भतीजा लायक अब।
शस्त्र और अस्त्र विद्याको, गए सीख होगये फायक अब ॥
अब सौंप अमानत इन को मैं, ईश्वर से मन को जोडूंगा।
दे राज काज बस अब उनको, उस प्रभू से नाता जोडूंगा ॥

(नाटक)

अये मेरे मन्त्रीगणों! ध्यान लगाकर मेरी बात सुनों, अब मैंने विचार करलिया है सिर्फ विचार ही नहीं बल्कि दिल मे पुख्ता इकरार करलिया है कि शेष आयु सर्व शक्तिमान पिता की याद में बसर करूं? बाकी रहा राज का सवाल यह युधिष्ठर की अमानत उस के सुपुर्द करूं।

दुर्योधन—पूज्य पिताजी जहां और चीजें करोगे मेरे लिए एक झोली और डंडा भी तयार करवा लेना जहाँ उन को अमानत सुपुर्द करोगे मुझे झोली और डंडा सुपुर्द कर देना।

करेंगे बस अब झोली डंडे का धन्दा।
गदा को फ़कत है गदाई का धन्दा ॥

---

* (द्रोण) धृतराष्ट्र और पाण्डव के पुत्रों के गुरु का नाम है।

जरा जाके कोई बनालाओ झोली ।
कि दर दर फिरेंगे बजायेंगे डंडा ॥
मुबारिक रहे तख्त और ताज उसको ।
वह मालिक है मेरा मैं उसका हूँ बन्दा ॥
पड़े हो पिताजी क्यों नीदों में गहरी ।
जरा जागो उट्ठो करो कुछ तो धन्दा ॥
जमाने की रफ्तार को कुछ तो जाँचो ।
सिर्फ हाथ रहजायगा झोली डंडा ॥

धृतराष्ट्र—हैं हैं मेरे नौनिहाल क्यों इस कदर दिल पर मलाल सच बता दुर्योधन तेरे दिल में यह क्या भाव उत्पन्न हुए क्यों इतना मगमूम हुआ तेरी इन पेचदार बातों को कोई क्या समझे ।

दुर्योधन—

कोई समझे तो क्या समझे समझ लेंगे कयामत में ।
यह अपनें इस मुकद्दर से निमट लेंगे कयामत में ॥
समझ कर मेरी बातों से ही लेना आपने क्या है ।
अगर अब भी न तुम समझे तो समझोगे कयामत में ॥
भतीजे आपके जो हैं बहुत होशियार और लायक ।
यह देदो राज सब उनको कि जोके था अमानत में ॥

(बतर्ज राधेश्याम)

उनको देदो राज यह, मुझको लख बनवास ।
हुकम यह लेने के लिए, खड़ा आप के पास ॥

हुकम करो जल्दी अये पिता बनजानें को देरी होवे ।
मनसा राजन तेरे दिलकी जल्दी ही फिर पूरी होवे ॥

धृतराष्ट्र—राजा बोले मालूम हुवा तेरे तो दिल में कीना है ।
बाहर से तो तू साफ दीखे अंदर से काला सीना है ॥
वह भाई तेरे चचा जाद, सच्चे और धर्मकी मूरत हैं ।
जिनमें से युधिष्टर शाक्षात, सचाई की ही सूरत है ॥
सब भाई तुम मिल कर रहना, गैरु की नजरें नीची हों ।
सब गैर डरेंगे तुमसे तब दुशमन की नजरें नीची हों ॥
दुर्योधन मनमें समझ जरा, इस बैर भावको बिसरा तू ।
दो टूक फैसला करदेंगे, मत अपने मनमें घबरा तू ॥

(नाटक)

दुर्योधन—कैसा कीना किसका कीना किस के साथ कीना आप की तो बात ही ऐसी है जिस का मूँह सर न सीना मैं तो कहता हूं कि उनकी अमानत उनको देदो फिर तालीयॉ पीटते और गाते बजाते फिरो ।

(गजल)

याद आवेंगे सखुन मौका निकल जाने के बाद ।
हाथ रख रख रोवोगे किसमत बदल जानें के बाद ॥

रंग बदलेंगी सचाई धर्म की यह मूर्ते ।
असलियत मालूम होगी नकलियत जाने के बाद ॥

काले सीने वाला तो गोरा नहीं होगा कभी ।
गोरे काले होंगे पहिले लाल होजाने के बाद ॥

गैरुं की नजरें तो नीची होती होतो होवेंगी ।
पहिले यह फेरें नजर मतलब निकल जाने के बाद ॥

फैसला दो टूक तुम किस बात का करते जनाब ।
राज ही वह क्या है जो रहजाय बट जाने के बाद ॥

हे पिता मत मुंहलगा इन सांप के बच्चों को तू ।
काटने को आवेंगे फिर दूध पीजाने के बाद ॥

(नाटक)

धृतराष्ट्र—दुर्योधन तेरे दिल में आज क्या समाया है किसने बहकाया है मालुम होता है तेरे दिमाग़ में फतूर आया है या भंग का गोला खाया है ।

मन्त्री—ताबेदार नें भी एक अर्ज करने के लिए जबान खोली है वह यह की जहां तक मेरे तजुर्बे में बात आई है इस समय दोनों का एक जगह रहना बाय से लड़ाई है इस लिए मुनासिब तजवीज मैंने यह ठहराई है कि मुनासिब समय तक उनको वरणावा भेज दीजे और लड़ाई झगड़े को बंद कीजे आखिर भाई भाई है — कबतक इनका क्रोध शान्त होजावेगा और यह उनको ले आवेंगे ।

(बतर्ज राधेश्याम)

बात मुनासिब है कहीं, राजनपति महाराज ।
बरणावा में भेज कर, मेटो झगड़ा आज ॥

वरना तो बात बहुत होगी, झगड़ा बढजाता दिखताहै ।
और बातों बातों ही में यह, किस्सा बढजाता दिखताहै ॥
इस वक्त तो हिकमत अमलीयह, टंटा सब मेट मिटा देगी ।
आखिर तो भाई भाई हैं, आपस में सुलह करादेगी ॥
क्या हुवा हवाखोरी के तौर, कुछ दिनों वहां रह आवेंगे ।
आपसमें सुलह सफाई से, फिर यों वापिस आजावेंगे ॥
मैंने तो खूब विचारलिया, तदबीर यह मुझको भाईहै ।
जो समझ मेरी में आई थी, वह मैंने बात सुनाई है ॥

धृतराष्ट्र—

बात तुम्हारी है सही, अय मंत्री विज्ञान ।
जो कहता हूं मैं उसे, सुनों जरा दे ध्यान ॥

अये मंत्रीजी क्या कहूं उन्हे, कहने में लज्जा आती है ।
अपराध बिना मैं क्यूं भेजूं, यह बात नहीं मन भातीहै ॥
वह मेरे लायक होनहार, दिल में क्या अपने समझेंगे ।
क्यों चचा यह ऐसा कहताहै, वह अपने दिलमें सोचेंगे ॥

(नाटिक)

*कर्ण—राजन् समझने की इस में कौनसी बात है यह कोई पेचदार खुराफात है सिर्फ राड़ मिटाने व सैर सपाटे की बात है।

शकुनि—(धीरेसे) हाँ इसी का नाम तो करामात है यही आकर के तो बाजी मात है।

धृतराष्ट्र—अच्छा मैं युधिष्ठर को बुलवाता हूं और वहां जाने के लिए कह सुनाता हूं वक्त मुनासिब के लिए यह झगड़ा मिटाता हूं मुझे आशा है कि वे मेरी अवश्य आज्ञा पालन करेंगे।

❀ शकुनि—अवश्य करेंगे निसंदेह करेंगे कल नहीं बल्कि आज ही करेंगे (धीरेसे) बिन आई मौत मरेंगे।

(चोपदार आता है और पांचोंपाण्डवों को लेआता है)

युधिष्ठर— (बहरतवील)

क्या हुकम है चचा आप फरमाओ तो हाथ बांधे हुए तावेदार खडा।

---

*(कर्ण) यह युधिष्ठर की माता कुंती के कानसे विवाह होने से पैहले पैदा हुवा सूर्य देवता ने यह पुत्र उसे दियाथा कुन्ती ने इसे दर्या में बहादिया था कान से पैदा होन की वजह से कर्ण कहलाया था.

* (शकुनी) दुर्योधन के मामूं का नाम है.

पालने आज्ञा आपकी इस घड़ी कमर कसता हुए तावेदार खड़ा ॥

मेरा तन मन चचा इसलिए है बना मैं करूं टहल सेवा तुम्हारी सदा
काम बतलावो मुझको है कोई अगर चेकरारी में है तावेदार खड़ा ॥
क्या हुकम है.... ....

मेरे इस जिस्मसे अयेप्यारेचचा कोई मतलब बन आजावे गर आपका
फिरमैं समझुंगाअपनेको तब खुशनसीब औरजानूंगा नवरूतवेदारखडा
क्या हुकम है चचा..

शीश मेरा रहे आपके चरण पर मेरी हरदम मनोकामना है यही—
बोलो मुखसे बजालाउंजो हुकम हो मुन्तजिर आपका तावेदार खडा
क्या हुकम है चचा..

आपका यह दुलारा भतीजा सदा आपही की इनायत सदाचाहता
गर हुईहो खतामुझसे सरजद कोई भुगतनेकोसजा हूं मैं हाजर खडा
क्या हुकम है चचा ....

धृतराष्ट्र—

मेरे बांके दुलारे प्यारे हो तुम अँधी आखों के तारे सितारे हो तुम
बीरयोद्धा हो और चन्द्र इस बंशके खानदां के चमकते सितारेहो तुम

हृदय खिल जाता है तेरीआवाज सुन और प्रसन्न होजाताहै मेरामन
आओ बैठो मेरे पास बच्चो मेरे बूढे इस जिस्म के तो सहारे हो तुम
मेरे बांके दुलारे प्यारे ....

मैं यह कहताहूं अये होनहारो तुम्हे वरणावामें ठहरो तुम कुछसमय
मेरी आज्ञाको पालन करो इस घड़ी मेरे हृदय के सच्चे प्यारे हो तुम
मेरे बाँके दुलारे प्यारे ....

मुझे मालुम बिल्कुल नही है कि क्यू बेवजह बदगुमा तुमसे रहता है क्यों
दुर्योधन है क्यों ऐसा रूखा हुवा मेरीजानो जिगर के सहारे हो तुम
मेरे बाँके दुलारे प्यारे ....

इस समय तो यही बेहतरी इसमें है जावो वरणावा में बेहतरी इसमें है
और बाद अजसफाई यहलेआवेगा कहना मानों मेरेअयेप्यारे हो तुम
मेरे बाँके दुलारे प्यारे..

(नाटिक)

धृतराष्ट्र—अये मेरे होनहार बच्चे, अये धर्म मूर्ति और सच्चे !
इस खानदान के चमकते सितारे अय मेरे प्राण प्यारे मजबूरन कहना पड़ता है कि चंदरोज वरणावा में क्याम करो आपस की बदगुमानी को यही थाम करो चंदरोज बाद वह सुलह सफाई पर आवेगा, झकमार कर तुम्हें ले आवेगा, मत घबरावो तुम्हारा तुम्हें और उसका हिस्सा उसे मिल जावेगा ।

(बतर्ज राधेश्याम)

युधिष्ठर—हिस्सा मिलने की कही, चचा कौनसी बात ।
घबरानें की कौनसी, इस में क्या है बात ॥

हमदास तुम्हारे अये चाचा, आज्ञा को पालन करते हैं।
और शीश चरण पर धरते हैं, फिर वरणावतको जाते हैं
हमनें क्या पिता को देखा है, तुम ही तो पिता हमारे हो
हम आज्ञाकारी पुत्रसदा. और तुम हमरे रखवारे हो
जो हुक्म बड़ोंका करते हैं, वे भवसागर से तरते हैं
नमस्कार लो अये चाचा, यह पुत्र तुम्हारे जाते हैं

पाँचों नें तब क्रमसे, चरणों शीश नवाय ।
तब महलों की ओरको, वीर चले हरषाए ॥

पाँचो जब वहाँ पहुँच गए, माता को शीश नवायातब।
आज्ञा पालन और हुक्म चचाका, उनकोहालसुनायासब ॥
वीर चले वरणावा को माता भी साथ तयार हुई ।
कुछ अर्से के पश्चात, वे फिर वरणावा में पहुँच गई ॥
दुर्योधननें मक्कारी से, वहां लाखका महल बनाया था।
उनको मरवाने के कारण, उसने यह ढंग रचाया था ॥
*विदुरजी को मालुम था सब, जो उसने जाल रचाया था।
चलने के समय युधिष्ठरको, उसनें यह हाल बताया था ॥
उस समय तो अपने भाइयोंको, सुनकरके नहीं बताया था।
लेकिन उस मौकेपर जाके, सब हाल उन्हे जितलायाथा ॥
होना तो आखिर वोहीहै, मंजूर जो उसको होता है ।
बदबदी हमेशा करता है, और नेकसो नेकी करता है ॥
बुरी बला है फूट सज्जनों, यह क्या नहीं करवाती है ।

---

* (विदुर) युधिष्ठर के एक और चचा का नाम है।

खान दान और कुल के कुल, मिन्टों में नष्ट कराती है ॥
जिसजगहकि यह घुसजाती है, समझोअबउसकी खैरनहीं।
निश्चय विनाश अब होवेगा, बसआजहै तो कल खैरनहीं ॥

बरणावा में पहूँच कर, देखा सुंदर महल ।
काहेका वह महल था, था मायाका खेल ॥
जलवाने के कारणें, दियाथा उनको फेर ।
ताके वोना आसकें, घर पर वापिस फेर ॥

जगमग जगमग वह करता था, जैसे रावण की लंका हो ।
मालूम दूर से देता था, जैसे विलकुल वह सोना हो ॥
तरह तरह के झाड़ और, फानूस लटकवायेथे वहां ।
लेकिन दुर्योधननें हरजा, उस जगह जाल फैलाये वहां ॥

युधिष्ठर— ॐ(गाना)ॐ

(वनर्ज कव्वाली)

पता कुछ ना चले मुझको कि क्यो वह वैर रखता है ।
हमारी ज्यान का लागू वह हर इकवक्त रहता है ॥
चचा भी आज कल मुझ से खफा क्यों होरहा नाहक ।
समझ में कुछ नहीं आता मेरे से क्या बिगड़ता है ॥
हमारे इस मुकद्दर के भले दिन कवसी आवेंगे ।
कि आए दिन नया नित कुछ न कुछ तो झगड़ा रहता है ॥
मैं कहता हूं कि वातों ही में सब यह मिट मिटा जावे ।
मगर मुझको तो यह झगड़ा बहुत कुछ बढता दिखता है ॥

हमें मरवाने की उसने बहुतसी कोशिशें करलीं ।
वह जो कुछ करता जाता है वह सब अपने को करताहै ॥
मैं अर्जुन भीम को अपने किये कब्जे में बैठा हूं ।
मैं जिस दिन छोड़ूंगा उनको फिर देखें क्या होताहै ॥
जहां तक होसकेगा शान्ती ही मैं तो रखूंगा ।
यह जितना वह बिगाड़ता है सभों को काँटे बोता है ॥

(बरगावा)

नकुल—आहा, हा, हा अरे वहारे महल तू महल है या जयपुर का छैल ।

युधिष्ठर—अजी काहे का महल है यह तो जेल है जेल ।

नकुल—अरे वाह तो महल किधर को है मुझे ले चलो जिधर को है ।

युधिष्ठर—भाई महल तो यह ही है परन्तु...............

नकुल—अजी आप की भी जवान है त्रिहिवाना कभी महल बताते हो कभी जेलखाना ।

युधिष्ठर—भाई यह दुर्योधन का वनाया हुवा तिलस्म है ।

अर्जुन—सचमुच ही हैरत होती है देखो कैसा बढचढ कर है ।
देखो क्या खूब चमकता है मानों सोने से बढकर है ॥

युधिष्ठर—अरे भाई यह तो लाख का है ।

भीम—खूब कही है आपने, एक लाख की बात ।
खरच हुए होंगे अन्दाजन, लाख आठ या सात ॥

युधिष्ठर—अरे वहारे ओवरसीयर, ऐस्टीमेट बाहर निकल कर लगाना वरना याद आजावेगा नाना जरा बाहर निकल कहीं भस्म मत होजाना हमारे लिए दुर्योधन ने यह लाख और रांग का महल बनाया है और उसने खूब सजाया है हमें जलाने को यह ढांचा खड़ा करवाया है जरासी आग दिखाने पर ही इसके भबक उठने का भय है ।

नकुल—बस अब तो बाहर जाकर ही पीऊंगापानी ।

सहदेव—क्यों बस अब याद आगई नानी जब का जमा खर्च करता था जवानी ।

अर्जुन—अरे दुर्योधना पाजी तू क्या २ चाल चलता है ।
तू मृते शेर को क्यों बारी २ छेड़ करता है ॥

भीम—मजा उस दिन ही आवेगा कि जिस दिन रणमें काटेगा ।
यह उसके खून का प्यासा कि उस का शीश काटेगा ॥

नकुल—हमारे जिस घड़ी के तरकशो से बाण निकलेंगे ।
तो उस जैसे हजारों बुजदिलों के प्राण निकलेंगे ॥

सहदेव—हटाये से न हटता है मिटाये से न मिटता है ।
ज्यों ही हम दबते जाते हैं त्यों ही शिर चढ़ता जाता है ॥

मिसल मशहूर दिन च्यौंटी के जब नजदीक आते हैं।
मौत जब होनी होती है तो उसके पँख आते हैं॥

*कुन्ती—अरे दुर्योधना कुलघातिया अन्याय करता है न तेरे
दिल दया कुछ है न तू कुछ शर्म करता है।

(एक बुढिया भिखारन मये अपने पाँचो बच्चों के वहाँ आती है)

—बच्चों का गाना—

हाय विधनानें क्या कर दिखाया।
उठ गया सिर से वालिद का साया॥

कोई वालीन वारिस हमारा, कोई देता नहीं है सहारा।
मोत ने भी नहीं हम को खाया, उठ गया सिर............
भूखे मरते हैं दिन सात से हम, भूख से हाय निकले मेरे दम।
भूखे मरतों को यह दिन है आया, उठ गया सिर..........
बाबा खाने को कुछ हमको देदो, दाता भूखों का कुछ पेट भरदो
हाय, जमाना मुसीबत का छाया, उठ गया सिर..........
हाये! वालिद किधर को पधारे, छोड़ा हमको है किसके सहारे।
आसमाँ को तरस कुछ न आया, उठ गया सिर..........
माता करदे सिफारिश इन्हों से, कुछ दिला पेट को तू इन्हों से
सात दिन से नही कुछ भी खाया, उठ गया सिर से........
देखकर भाग्यवां कोई तुम को, कह दिया अपना सब हाल तुमको
हे प्रभु! तेरी अद्भुत है माया, उठ गया........ ....॥

---

*(कुन्ती) युधिष्ठर की माता का नाम है.

(नाटिक)

युधिष्ठिर—माई इनको चुप कराओ, यह विलाप मत सुनाओ।
आँसू मत बहाओ, और मेरे दिल को मत घबराओ ॥

आह जमाने ! ओह जमाने ! तू कभी कुछ बिगाड़ता है कभी कुछ संवारता है किसी को रुलाता है किसी को हंसाता है भला इन मासूमों ने तेरा क्या बिगाड़ा है ज्यो इन पर अपना हाथ झाड़ा है अच्छा भीमसेन इन के लिए कुछ खाने को लाओ और इन के हृदय को शान्त बनाओ इन की भूख मिटाओ।

ज्यो सुने न आह अधीनों की, जग में दिन च्यार जिया न जिया।
जिस के दिल में कुछ रहम नही, वह भी दिन च्यार जिया न जिया ॥

(वतर्ज़ राधेश्याम)

बुढिया—बेटा हमको दुःख ने, बहुत लिया घबराय।
इस जीने से तो भला, जल्दी ही मरजाय ॥

बेटा जिस दिन वालिद इनका, दुनिया से स्वर्ग सिधार गया।
सुख सम्पत हमरा अमन चैन, दुनिया से जभी पधार गया ॥

बाकी मांदा आयु के दिन हम, पूरे करते फिरते है।
और मांग २ कर टुकड़े हम, दो जख को भरते फिरते हैं ॥

{ बुढिया अपने बच्चों समेत वहीं खाना खाकर सोजाती है रातका समय है हर तरफ चुपचापी है मकानका बनानेवाला पुरोचननामी ज्यो दुर्योधन के हुक्म से उसको अग्नी भी दिखा ने का इरादा किये हुए गहरी नींद में सोया पड़ा है। }

अर्जुन—क्यों गफलत करते हो बाहर क्यो नहीं निकलते हो बिन आई मौत का इरादा क्यों करते हो चलो चुपके से सुरंग की राह से निकल चलो।

भीम—चलते समय इसे बत्ती भी दिखाते चलो और दुशमन की छाती पर मूँग भी दलते चलो।

चलो चाल ऐसी यह सोता न जागे।
गफलत ही गफलत में परलोक भाजे॥
ज्यों बोता है काँटे किसी दुसरे को।
जरूरी है यह आते उसके ही आगे॥
ज़रा बाहर निकलो मैं बत्ती दिखाऊं।
तो फिर बाद इस के यह सोये या जागे॥

युधिष्ठिर—भाई भीमसेन यह क्या गजब कर रहे हो इस को क्यों जला रहे हो इस बेचारे का इस में क्या कसूर है यह तो सब उसी का फतूर है यह विचारा तो उस के हुक्म से मजबूर है।

भीम—क्यो जी! दुर्योधन इस का मित्र और हमारी तरफ इस का दिल दुशमनी से भरपूर है।

युधिष्ठर, अर्जुन, नकुल, सहदेव बाहर निकलते हैं और भीमसेन चलते समय उसे बत्ती दिखाता है मकान और उस के अन्दर वाले भबक उठते हैं तब पांचो पाण्डव जङ्गल की राह लेते हैं।

युधिष्ठिर—(कुछ दूर जाकर) ओहो भाई भीमसेन वह भिखारन और उसके बच्चे भी बाहर निकल आये थे ?

भीम—(सोचकर) हाय गजब हुआ ! अनर्थ हुवा ! ज़ुल्म हुवा ! पाप हुवा ! नालायकी हुई अजी भाई स्हाब भिखारन और उस के बच्चे अन्दर ही रहगए।

युधिष्ठिर—अरे भाई तू अन्धा धुन्ध ही सब काम करता है।
सोच करके नतीजा तू नहीं कुछ काम करता है ॥
तू अपने बल में अपने आप को ही भूला बैठा है।
क्यामत आनेवाली है क्यों इतना फूला बैठा है ॥

भीमसेन—भाईसहाब ! जान बूझ कर मैंने उन को जलाने की कोशिश नहीं की अलबत्ता गलती हुई जिस का पश्चाताप मैं खुद करता हूं।

आग लगी जब उस जगह, जला लाख का महल।
मिट्टी में मिलने लगा, दुर्योधन का खेल ॥
लपट ज्वाला की उठी, शोर मचा घमशान।
बुढिया और बच्चे तभी, जलने लगे वहाँ ॥

भागे भागे सब लोग वहाँ, जलते मकान के ढिग पहुँचे।
बच्चे, बुड्ढे, बालक, जवान, उस जा पर सब के सब पहुँचे ॥
बुढ़िया अंदर से शोर करे, कोई रक्षा करो हमारी अब।
अफसोस जमाने को भाई ना, यह भी दिशा हमारी अब॥
बच्चे ऐसे चिल्लाते थे दिल सब के बैठे जाते थे।
हिम्मत वहाँ किस की होती थी, सब वापिस मुड़ते जातेथे॥

आँहें उस रोती बुढ़िया की, मानो आकाश हिलाती थीं ।
उन सुनने वाले लोगों के, हृदय को तब दहलाती थीं ॥
बुढ़िया यह कहती जाती थी, मेरे बच्चो अब सबर करो ।
किस्मत में ऐसा लिक्खा था, अपनी छाती पर जबर करो ॥
अफसोस जमाने तेरा क्या, हम लोगों ने अपराध किया ।
तुझ को इतना भी ना भाया, तड़पा तड़पा बरबाद किया ॥
अच्छा बच्चो लो राम नाम, वही तुम्हारा रखवारा है ।
दीनों का स्वामी वह ही है, दुनिया का वही सहारा है ॥

सबने यह समझा वहाँ, जल गए पाण्डव आज ।
दुर्योधन मक्कार नें, किया यह काज अकाज ॥
प्रातः काल उन लोगों नें, जब जली हुई लासें देखी ।
अफशोश किया सबनें उस जा, जब जली भुनी शकलें देखी ॥

कोई कहता था भाईयों का देखो, क्या ही खून सफेद हुवा ।
आपस का प्यार मुहब्बत सब जग से बिल्कुल नापैद हुवा
देखो वीरों की शकलें क्या, जल भुन कर अब सब खाक हुईं ।
पहचान नहीं होती हैं यह, बद शकल हुई नापाक हुई ।
यह जली हुई औरत की लाश, निश्चय बद बख्त कुन्ती है ॥
जिसके पाँचों जल गए आज, निश्चय बद बख्त यह कुन्ती है
करके उंगली कोई कहता था, अर्जुन की लाश पड़ी है वह ।
बलधारी योधा शूरवीर की, उलटी लाश पड़ी है वह ।
हा! कहाँ भीम और गदा, मिट्टी में मिलकर खाक हुआ ॥
अए दुर्योधन नाकारे क्यों, सीना नहीं तेरा चाक हुवा ।
अरे जुल्मी पापी अन्यायी, नहीं जुल्म की टहनी फलनी है ॥

कहीं चली हुई कागजकी नाव,देखी भी जल पर चलती है।
इस खान्दान का समझो यह,निश्चय विनाश अब होवेगा॥
ऐसे पापी जब रेहते हैं, गर आज नहीं कल होवेगा।
अए दुर्योधन अन्यायी क्या यह, दिल में तेरे समाई थी।
ऐसा जब करने लगा तू, क्यों मोत न तेरी आई थी॥
इन सब लाशों को लेकर वे,शम शान भूमि में पहूँच गए।
दाह संस्कार करके उनका,वापिस अपने घर पहूँच गए॥

खबर हस्तिनापुर गई, दुर्योधन के पास।
बहूत खुब दिल में कहा, उनका हुवा विनास॥

मोत भी पाई ऐसी जो, पापी को भी नहीं मिलती है।
बन्द थी तेरे दिलकी जो अब आज कली वह खिलती है॥
कब से पाजी मेरे दिल में, काँटा सा आन खटकते थे।
चलती गाडी के नीचे वह, रोड़ा सा आन अटकते थे॥
दुर्योधन की चाण्डाल चोकड़ी,को तो हुआ आनंद बड़ा।
और उसके खुद के दिल नें भी,तब पाया परमानंद बड़ा॥
शकुनी और कर्ण *दुशासन सब,मिल कर आनन्द मनाते थे
दुर्योधन के खुश करनेको, अपनी भी खुशीदिखाते थे।

उधर सुनो अए सज्जनों,बाकी का अहवाल।
खबर हुई रनवास में, सुनो वहाँ का हाल॥

महलों में खबर लगी जब यह, प्रलय सा शोर हुवा तब वाँ।
गन्धारी रुदन मचाती थी, राजा को घोर हुवा तब वाँ॥

---

*(दुशासन)दुर्योधन के छोटे भाई का नाम है.

बुड्ढी आँखों ने रोरो कर नयनों को अपने लाल किया।
और नोच नोच कर बालों को, हालत को तब विकराल किया॥
भिष्मजी को सुन करके, अपने मन में बडा क्लेश हुआ॥
गुरु द्रोणाजी को सुन करके, शिष्यों का बडा क्लेश हुवा।
नरनारी रुदन मचाते थे, घर घर में हाहा कार हुआ॥
उस क्रूर वाक को सुन कर, सब जा पे हाहा कार हुआ।

(जंगल)

{ युधिष्ठर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, मय माता कुन्ती के जंगल में एक कुटिया में बैठे हुए है। }

भीम—भाईसहाब दुर्योधन के आज कल घी के दिये जल गए होंगे उछलता होगा कूदता होगा अपनी चाण्डाल चौकड़ी में बैठ कर खूब खुशी मनाता होगा।

अर्जुन—सिर्फ उछलता कूदता ही नहीं होगा बल्कि आज कल उसका दिमाग आसमान पर चढ़ा होगा किसी को ख्याल में न लाता होगा।

भीम—(दुर्योधन की तरफ इशारा करते हुए)

गाना

अरे कमबख्त तेरी चाल निराली न गई।
दुशमनी दिल से तेरे अब भी निकाली न गई॥

हाय अफ़शोश है कि शेर बने हैं गीदड़ ।
भीम तुझ से तेरी तलवार सम्भाली ना गई ॥
अए गदा ठीक बता तोड़ेगी किस दिन सीना ।
जिन के दिल से की अभी जाली निकाली न गई ॥
छत्री वंश में हो काम भिखारी का करें ।
लाज इस वंश की अए तेरे से पाली न गई ॥

युधिष्ठिर—भीमसेन जरा सबर करो सीने पर जबर करो दिल को शान्ती दो ईश्वर हमें भी कभी न कभी खुशनसीबी का दिन दिखावेगा जमाना जरूर हमारा अच्छा दिन आवेगा ।

स्वयम्बर

जङ्गल में रमते रहे, कुछ अरसा वह वीर ।
इस के पश्चात् गए, पाञ्चाल देश के तीर ॥

राजा द्रौपद की नगरी म वे, पांचों वीर वहां पहुंचे ।
और अपनी माता के समेत, विप्रों का भेष बना पहुंचे ॥
अपनी जब लड़की कृष्णा* को, वहां रचा स्वयम्बर राजाने ।
स्थान स्वयम्बर का बनवाया, बहुत ही सुन्दर राजाने ॥

*(कृष्णा) राजा द्रौपद की लड़की का नाम है जो द्रौपदी भी कहलाती थी ।

उन पांचों वीरों ने आकर, जङ्गल में डेरा लगा लिया।
इक छोटा मिट्टी का मकान, रहने को अपने बना लिया॥
बडे बडे योधा बलधारी, देश देश से आये वाँ।
और ताजदार शहजादे सब, किसमत अजमाने आये वाँ॥
दुर्योधन, कर्ण, दुशाशन और, शकुनी भी वाँ पर आपहुंचे।
कृष्णा से ब्याह की इच्छा से, बलधारी योधा आपहुंचे॥
ब्राह्मण भी देशो देशों से, उस जगह देखने को आए।
और देश देश के भाट लोग, उस जा पे सब के सब आए॥
राजा द्रौपद नें उन सब का, अच्छा आदर सत्कार किया।
सब को ठहराया खेमों में, सब से अच्छा व्यवहार किया॥
राजा ने गलियों सड़कों को, हर तरह से खूब सजाया था।
और नगरनिवासियों ने अपने, घर घर को खूब बनाया था॥
आखिर वह दिनभी आपहुंचा, जिस दिनकी तारीख मुकर्रिरथी।
अरु भूप वहां पर जा पहुंचे, जिस जा वह जगह मुकर्रिर थी॥
इक बांस था लम्बा गडा हुआ, जिस पर इक नकली मछली थी।
वह मछली बांस की चोटी पर, तेजी से चक्कर करती थी॥
उस बांस के नीचे भरा हुवा, इक तेल का वर्तन रक्खा था।
और उस मछली का पर छाया, उस तेल के अन्दर पड़ता था॥
अक्स देख कर एक तीर जो, मीन की आँख में मारेगा।
राजा की बेटी कृष्णा को, बस वह ही ब्याह ले जावेगा॥

भाट का गाना

तर्ज़ श्रीकृष्णलाज रख मेरी

कहे भाट सुनुं घलधारी।
सब ध्यान से बात हमारी॥

मछली जो छेद गिरावे, कृष्णा को व्याह लेजावेजी।
बस यही है शर्त हमारी, सब ध्यान ....
अपना भुजबल दिखलावो, मच्छली को धरण गिराओजी
पूरण हो आश हमारी, सब ध्यान..................
राजाने जो फरमाया, सब तुमको हाल सुनायाजी
उट्ठो कोई करो तयारी, सब ध्यान ....॥
मैने जो अर्ज सुनाई, सब सुनलो ध्यान लगाईजी।
हम तो हैं आज्ञाकारी, सब ध्यान............—॥

—:जरासिंध:—

जरासिंध लपकात भी, लीनी हाथ कमान।
मछली छेदन के लिए, लीना उसको तान॥

बोला यह बात जरासी है, यहलो मै तीर चलाता हूँ।
और बाण आँखमें मार अभी, भूमीपर इसे गिराताहूँ॥

जाओ सब अपने घर जाओ, व्यर्थ ही तुम आए हो याँ ।
यह लो यह तीर लगा जाकर, अब जाओ क्यों आएहो याँ ॥

सब के सब—अजी वाह किसकी आँख में लगा मछली की में की या आपकी में जमीन पर कौन गिरा आप या मीन घर हम जांय या आप जैसे बल हीन ।

—:शकुनी:—(गाना)

मेरा गर नामहै शकुनी तो मुतलिक शक नहिं इसमें ।
मैं ही पूरी करूंगा शर्त बिल्कुल शक नहीं इसमें ॥
गुरू से जो भी सीखा है उसे जाहिर करूं मैं आज ।
हाथ फेरी का है यह काम मुतलिक शक नहीं इसमें ॥
यह देखो बाण पर चिल्ला चढाता और लगाता हूँ ।
निशाना आँख में उसकी यह मुतलिक शक नहीं इसमें॥

(तीर चलाते ही शकुनी गीर पड़ता है सब सभा हँसने लगती है)

सब के सब:—अजी आओ तशरीफ लाओ रोते क्यों हो क्या कहीं चोट लगी पानी ओटा कर इस पर डाल लेना आराम आजावेगा ।

—:कर्ण:— (बतर्ज राधेश्याम)

कर्ण उठा ललकार कर, क्या है इसमें भेद ।
अभी बाण यह मार कर, करूं आँख में छेद ॥

मैं वहहूँ जिसका सानिना, दुनिया में दूजा और कोई
मेरे आगे जो ठहरसके, देखा ना ऐसा ओर कोई ॥
मै जब जब वाण उठाताहूँ, भूमी भींकम्पीत होती है।
मेरे इस भुज बल के आगे, दुनिया सब पानी भरती है ॥
जब वाण मेरा यह चलता, मानों प्रलय हो जाती है।
दुशमन को भय होजाता है, छातीं उस की फटजाती है ॥

{ कर्ण वाण चलाने लगता है कि द्रौपदी फोरन उठकर उस को रोकती है। }

(नाटिक)

द्रौपदी—तमाम उपस्थिति सज्जन मेरी बात सुनले मुनासिब है की इस के हाथ से वाण रखवादें और इसको इस इरादे से हटवादें में इस अदम पता शख्श के साथ हरगिज हरगिज शादी करन के लिए तयारनही हूँ अवल तो इसको इस काम में सफलता पाना ही नामुमकिन है अगर ना मुमकिन बात मुमकिन होभी जावे तो हरगजि इसके गले में मै जयमाला नही डालुगी क्योंकि जब उसके माता पिता पिता ही का पता नही तो कैसें में उसको अपना पति बना लूंगी।

कर्ण—ओफ! गजब! अभिमान वहारे गरूर अरी वहारी अभिमान की पुतली वदला क्या चीज होता है वह तेरे शरीर के एक एक रोम से लूंगा।

(गाना)

यह रखना याद पापिन लफ्ज जो मुँह से निकाले हैं ।
नहीं यह शब्द हैं यह तीर हैं वर्छे हैं भाले हैं ॥
तेरी इस बात का बदला मैं इक इक रोग से लूंगा ।
यह कह कर तूने अब अपने बुरे दिन समझ पाले हैं ॥
मुकद्दर जब पलटता है अक्ल काफूर होती है ।
समझ तू बस यही मन में बुरे दिन आने वाले हैं ॥
तकब्बुर हुस्न का करके यह तूने कहदिया मुझ को ।
व लेकिन यह समझ लेना कि हम भी मूंछों वाले हैं ॥

[कर्ण अपनी जगह पर बैठजाता है ।]

—: शिशुपाल :—

खड़ा हुवा शिशुपाल तब, बोला यों घबराय ।
बहुत शोक होता मुझे, सब ही गए चकराय ॥

बल हीन हुए नाकारे सब, फुरती मैं अपनी दिखलाऊँ ।
और सब की आंखो के आगे, मैं ठीक निशाना बिठलाऊँ ॥
कृष्णा का आज पति बनना, मेरी किसमत में लिखा है ।
यह तो सब ही ना हिम्मत हैं, इन लोगो में क्या रक्खा है ॥

*धृष्टद्युम्न—खाली बातें तो बहुत करो, कुछ भुजबल होतो दिखलाओ ।

---

* (धृष्टद्युम्न) द्रौपदी के भाई का नाम है ।

वरना जैसे वे बैठेहैं, तुम भी उन में जा घुस जाओ ॥
काम समाप्त के पहिले, नहिं अकल मंदशोला करते ।
क्या नहीं सुनाजो गरजे हैं, वेह रगिजना वर्षा करते ॥

{ शिशुपाल का वार भी खाली जाता है और अपनी जगह पर बैठजाता है । }

—: दुर्योधन :—

दुर्योधन तबवाणको, लेके हुआ खडा ।
शर्त बजाने के लिए, आगे तभी बढा ॥

सोचा अपने मन में उस ने, तेरी ही किसमत अच्छी हो ।
शायद इस का पूरा करना, तेरी किसमत में लिखा हो ॥
यह सोच आंख को ताक तभी, चकराती मछली पर मारा ।
लेकिन अफ़्सोश गया खाली, मुँह तकता रहगया वेचारा ॥

(नाटिक)

धृष्टद्युम्न—तमाम हार चुके शोक ! महान् शोक ! अपने आपको क्षत्री कहलाते हो, बढ बढ कर बातें बनाते हो ! और इस मामुली शर्त को बजालाने में शरमाते हो धनुषवाण को रखदो पतंगउडाया करो औरतो में बैठ कर तालियां बजाया करो नाज़ नखरेदिखाया करो अरे कायरो चमकीले कपड़े दिखाने आये हो या बाहादुरी जिताने आये हो आओ जरा नाचकरके दिखाओ और हमारे

रञ्जों को मिटाओ तुम्हारी शकलों की तरफ देख कर मुझे दया उपजती है और ख्वामख्वा हमारी छाती जलती है।

क्षत्री का नाम अब दुनियां से मिटजाने को है।
कीर्त्ति जाने को और अपकीर्त्ति छाने को है॥
औरतों का पहन बाना नाज़ दिखलाया करो।
ऐसे कामों से अगर तुम लोग घबराया करो॥

ब्राह्मणों की कतार में से एक शख्स, इन अपमाणकी बातो को सहन ना करता हुआ और सफों को चीरता हुवा बाहर निकलताहै बहादुरी और वीरता के नीशान उसके रोंग रोंग से टपक रहे हैं क्षत्रियों की अपमानिता सुन और उन राजाओं की कयारता देखने के सबब से उसकी आखें लालहोरही है वह कौन शख्स है क्या ब्राह्मण है? नहीं महाबली वीर अर्जुन है जो गाण्डिव धनुषको टंकार करता हुवा आगे बढता है लेकिन ब्राह्मण भेष होने की वजह से सब यह समझते है कि यह ब्राह्मणहै।

एक ब्राह्मण—अरे यह कहा जारहा है इसे रोको।

अर्जुन—मै अभी तीर यह मार इसे पाताल लोक पहुंचाऊंगा।
और ठीक निशाना बैठाकर मैं करामात दिखलाऊंगा॥

दूसरा—अरे भाई चुप रह यहीं बैठजा क्यों ज्यादा घमण्ड करके अपने, जातभाइयों के रोजगार पर लात मारता है।

पहीं पाहिला:—अरे क्यों नौजवानी कें नशे में फूला फिरता है भला तू इस काम में सफलता पासक्ता है।

दूसरा— इसे पकड्लो

तीसरा—,, जकड़लो

चौथा— ,, बांधलो

पांचवां—खबरदार जो आगे कदम बढाया है

छुटा—यह ब्राह्मण नहीं मालुम होता ब्राह्मण के भेप में ब्राह्मणों का कोई दुशमन मालुम होता है।

{ अर्जुन किसी की भी नहीं सुनता है और आगे बढता चला जाता है। }

सबकेसब—हाय तेरा सत्यानाश! मारी हमारे रोजगार पर लात अरे ढीठ अब भी वापिस आजा वरन मारा जायगा बिन बात।

(बतर्ज श्रीकृष्ण लाज रख मेरी)

अर्जुन— कहे अर्जुन वीर विचारी।
सुन द्रोपद बात हमारी॥

मुझे शोक यह इन पर होवे, दुर्वलता सहन ना होवेजी।
हमें रञ्ज हुवा अति भारी, सुन द्रोपद........ . ... ॥
मछली को छेद गिराऊं, तेरे मन का शोच मिटाऊंजी।
अब तीर लगाऊं कारी, सुन द्रोपद... : : .... ॥

अपना भुजबल दिखलाऊं, मछली को धर्णी गिराऊंगी
बोलो मुख से त्रिपुरारी, सुन द्रोपद.................. ।

जगदम्बा मातेश्वरी, रखना मेरी लाज ।
भरी सभाके बीच में, पूरण करदे काज ॥

अभिमान नहीं करता कुछ भी, सीखा जो गुरु से मैंने है ।
प्रकाश उसे मैं आज करूं, यह दिल में ठानी मैंने है ॥
अच्छा लेकर के राम नाम, देखो यह बाण चलाता हूं ।
और चमत्कार विद्या अपनी का, आज तुम्हें दिखलाता हूं ॥
उस पारब्रह्म का ध्यान किया, फिर तीर चलाया तब उसने ।
और ठीक निशाना बिठला कर, सब स्वांग गिराया तब उसने ॥

देखलो और देखलो अच्छी तरह से देखलो ।
धर्णी पर मछली पड़ी और तीर उस में देखलो ॥
आंखों वाले आंखें खोलो आओ दिखलायें तुम्हें ।
फिर ना कहना कुछ हमें दिल खोल कर तुम देखलो ॥

दुर्योधन—हरगिज नहीं मुतलिक नहीं इस स्वयम्बर की शर्त
क्षत्रियों के लिए थी ना कि ब्राह्मणों के लिए ।

शकुनी—अजी इसे बाहर निकाल दो

कर्ण—देदो धक्के

दुशासन—करदो मण्डप से बाहर

(नाटिक)

धृष्टद्युम्न—बस अब जो कुछ होना था सो हो चुका यह शर्त खास चत्रि के लिए होना कब और किसने कहा था बेहतरी इसी में है कि अपने २ घर जाओ यह तन अकड़ कर किसी और को दिखाओ ? ज्यादा फिसाद मत मचाओ।

(धृष्टद्युम्न के कहने पर सब चुप होजाते हैं।)

दुर्योधन—भाई कर्ण ! इस वक्त तो इस के साथ बोलना ना मुनासिब है क्यों कि राजा द्रौपद इस की हिमायत पर होगा आगे चल कर इस सुनहरी चिड़िया को इस से छीन लेंगे और सजा मुनासिब ठहरायेंगे।

{ तमाम सभा बर्खास्त होती है अर्जुन द्रोपदी को ब्राह्मण के भेष में लिए हुए जङ्गल में जाता है कर्ण दुर्योधन दुशासन वगैरह उसे घेर लेते हैं। }

दुर्योधन—ठैरजाओ मौतके नवाले इसको करदे हमारे हवाले कहाँ से आये है भड़वे स्वयंवर जीतनेवाले।

अर्जुन—क्यों तेरेबाबा का हमने क्या बिगाड़ा।

दुर्योधन—तूने बहुत गुस्ताखीकी हमलोगो की बेइज्जतिकी।

अर्जुन—इस में गुस्ताखी की कोनसी बात आई है हमने अपनी शस्त्रविद्या की करामात दिखलाई है।

दुर्योधन—क्या तू बकवास करने से बाज ना आवेगा मैं कहता हूं कि द्रोपदी को हमारे हवाले कर और अपनी राह ले।

अर्जुन—वरने ?

दुर्योधन—वरने मेरे बाण तेरे शीश का इन्तजार कर रहे हैं और तुझे मौत के घाट उतारना चाहते हैं।

अर्जुन—स्वयम्वर में इन बाणों को कौनस दीमक चाट गई थी वहां किस लिए आप की छाती फाट गई थी।

दुर्योधन—ठैरजा ओ गुस्ताख अभी तेरा सर उडाता हूं और तुझे तेरी करनी का मजा चखाता हूं तुझे यम लोक पहुंचाता हूं।

अर्जुन—मैं ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध तुम्हारे ऊपर शस्त्र चलाना ना चाहता था नरमी से काम लेना चाहता था अगर तुम हट से बाज नहीं आते हो तो आओ मेरे शस्त्रों को अजमाओ।

{ दुर्योधन तीरोंकीबोछाड़से घबराजाता है और कर्ण उसके मुकाबिले पर आता है }

(वतर्ज राधेश्याम)

कर्ण— ओ मूर्त शैतान की, होगा तेरा मर्ण ।
जाने क्या मुझ को नहीं आपहुँचा है कर्ण ॥

आ पहूँचा है कर्ण सम्भल कर, आगे कदम बढाना रे ।
भूल गया है शायद मुझको, जाने मुझे जमाना रे ॥
मार वाण यह तेरे उर में, यम की पुरी पठाउंगा ।
अब सम्भल ज़रा ओ बकवासी, यम लोक तुझे पहूचाउंगा ॥
क्या ताकत ताव मजाल तेरी, जो तू उसको ले जावेगा ।
वुजादिले क्या तेरी शक्ती है, अब करनी का फल पावेगा ॥
हम राजपूत शहजादे है और तू कायर भिखमंगा है ।
हम जैसे वीरों के आगे तू इक नाचीज पतंगा है ॥

अर्जुन—ओह शहजादे ! अरे वाहरे हरामजादे अच्छी तरह जानता हूं तेरे बाप दादे ले सम्भल कर दिल के पूरे इरादे ।

{ कर्ण तीरों की बोछाड़ से घबरा जाता है और हैरान हो कर दुर्योधन से कहता है । }

कर्ण—अय भाई दुर्योधन यह तीरों की काट तो कुछ और ही बतला रही है ।

परदे में छुप रहा है कोई ओर ही सितमगर ।
बाणों से काट करता कोई ओर ही सितमगर ॥
आँखों की चमक जाहिर करती नहीं भिकारी ।
यह जीत लेगया है कोई ओर ही स्वयम्बर ॥

दुनियां में मेरे आगे ठैरे हैं फक्त अर्जुन ।
यह तीर हैं या शोले अग्नि के विश्वम्बर ॥

चले-जाते हैं
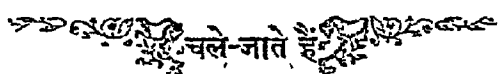
पाण्डव कुटिया में गए, अपनी मा के पास ।
हाल कहा उनको तभी, जा कर उन के पास ॥
उधर सुनों अए सज्जनों, बाकी का अहवाल ।
द्रोपद राजा के हुआ, दिल पर बहुत मलाल ॥

बोले यह बड़ा अनर्थ हुआ, बेटी मैंने किसको देदी ।
जो भीख मांग कर खावेगा, ऐसे भिखारी को देदी ॥
अफशोश महल में पली हुई, अब भीख मांग कर खावेगी ।
मालूम नहीं उसके घरका, बेटी किस जगह पर जावेगी ॥
मेरे दिल की उम्मेद जो थी, मिल कर मिट्टी में खाक हुई ।
जब बेटी ऐसी हालत में, इक भिखारी के साथ हुई ॥
जिसके घरका मालूम नहीं, वह किधर से आया किधर गया ।
किसे ढूंढने को भेजूं वह किधर से आया किधर गया ॥
कोई रमता जोगी होगा वह, कृष्णा को लेकर चला गया ।
और मेरे दिल की इच्छा को, अन्दर ही अन्दर जला गया ॥

चोपदार—महाराज का दिन दूना और रात चौगना इकबाल हो कृष्णाजी पधारे हैं ।

द्रौपद—अच्छा उनको आनेदो ।

कृष्णजी—मुबारिक हो राजन् मुबारिक हो कैसे बुड़बड़ा रहे हो क्या किसी लड़के को पढा रहे हो।

द्रौपद—कृष्णजी क्यों चिड़ा रहे हो खामखां दिल जला रहे हो।

कृष्णजी—हैं है राजन यह क्या कहे जा रहे हो क्या आप सन्तुष्ट नही हुए।

द्रौपद—नहीं हरगिज नही मुत्तलिक नही (माथे पर हाथ रखकर) हाय मेरी प्यारी बेटी कृष्णा एक भिकारी के साथ जाय इस से ज्यादा और क्या अनर्थ होगा।

कृष्णजी—अच्छा तो आप इस शशपञ में फंसेहुए हो वह कार्य तो राजन आपकी मनशा के मुताबिक होगया।

द्रौपद—आपभी इतने अकल मंद होकर क्याकहे जारहे हो क्या मेरी मनशा एक भिखारीके साथ व्याह देनेकीथी।

कृष्णजी—बतलाइये आपकी क्या मनशाथी।

द्रौपद—यह कि कृष्णा का विवाह अर्जुन के साथ किया जावे लेकिन अर्जुन तो दूर रहा उस को कोई योग क्षत्री भी ना मिला।

कृष्णजी—राजन् फिकर मत करो इस शर्त के पूरा करने वाला पृथ्वी पर सिवाय अर्जुन के और दूसरा कोई

नहीं हैं आप मेरे पर भरोसा करिए यह अर्जुन ही है देखो ! धृष्टद्युम्न के कहने पर उसे कितना जोश आया भला भिखारी में यह आसार होसक्ते हैं।

धृष्टद्युम्न—मुबारिक हो पिताजी धन्यभाग हैं आप के पाँचों पाण्डव मय माता कुन्ती के जंगल में विराजमान हैं उनको अपनी कानों से रानी कुन्ती को उनके नाम पुकारते और आशिर्वाद देते सुन कर आया हूँ शर्त पूरी करने वाला अर्जुन ही है।

{ राजा द्रौपद यह बात सुन कर बहुत खुश हुए और उसको बुला कर अर्जुन के साथ रीत्यानुसार व्याह किया। }